



BHARAT BHAVAN  
INTERNATIONAL  
BIENNIAL  
OF PRINTS,  
Feb. 1989

आदरणीय रत्ना साहेब,  
मादर चण्ण रूपरि,

आपका पता मिला, हनेल मिला; शक्ति मिला,  
काम शुरू ही किया भा उसमें लेगी आ  
गई। अब सोचता हूँ कि कुछ बड़े काम करें।  
प्रिन्ट्स निकालना भी शुरू किया हूँ। रूष वस्ता  
हूँ और अतिव्यस्त रहना चाहता हूँ। भारत  
भवन के कलाकार मितों की एक संस्था भी  
इधर बन गई है पहली कार्यक्रम बहुत ही  
सफल रहा जिसमें आम्बादास के चित्रों की  
प्रदर्शनी, रमाकान्त उमाकान्त गुंदेचा का स्तूपद,  
कमल ताविरा, जमोत्सना मिश्र का काठ पाठ  
व अमूर्ति कला पर बातचीत। दूसरा आयोजन  
अशोकजी का एक आलेख 'देह का देशकाल'  
नृत्य पर आलेख बहुत ही सुंदर लगा है।



BHARAT BHAVAN  
INTERNATIONAL  
BIENNIAL  
OF PRINTS  
Feb. 1989

हम लोगों का तीसरा आयोजन भावाग्रंथि का  
है। पंडित मल्लिकार्जुन मंसूरजी की तबीयत इन  
दिनों काफी खराब है। उनके लिए एक शुभकामनाएँ  
नाम का कार्यक्रम जिसमें भोपाल शहर के कई  
संगीतकार अपना आधे घंटे का कार्यक्रम प्रस्तुत  
करेंगे। उस्ताद गिया फरीदुद्दीन डगर, उस्ताद  
लतीफ खाँ साहेब, ओमप्रकाश चौरसियाजी, रहमत खाँ  
साहेब आदि अनेक।

इसी के साथ अंदरूनी व्यस्तता भी  
बढ़ी है। इन दिनों अशोक जी ने अखबार में एक  
कालम लिखना शुरू किया है। उसकी कतरन आपको  
भेज रहा हूँ। एक आलेख उन्होंने चित्रकला पर भी  
लिखा है। संगीत पर भी लिखा है। २५६ लिख रहे हैं।  
उनकी नयी किताब "कहीं नहीं वहीं" भी आ चुकी  
है। 'समाप्त' नाम है हम लोगों की संस्था का।  
शेष में अगले पत्र में

आपका

—॥॥॥—